एक ठहराव की ओर

लेखक-अमर्त्य लाहिड़ी (प्रोफेसर, अर्थशास्त्र,ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)-III (भारतीय अर्थव्यवस्था)

इंडियन एक्सप्रेस

16 मार्च, 2019

"विशेषाधिकारों को वापस लेने का अमेरिकी कदम भारत को अपने निर्यात की सामान्य स्थिति पर आत्मनिरीक्षण करने का अवसर प्रदान करता है।"

सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (जीएसपी) के तहत भारत के निर्यात विशेषाधिकारों को रद्द करने का अमेरिका का हालिया फैसला भारतीय निर्यात की स्थिति पर ध्यान केंद्रित करता है। गौरतलब है कि जेनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रेफरेंस या सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली अमेरिकी ट्रेड प्रोग्राम है, जिसके तहत अमेरिका विकासशील देशों में आर्थिक तरक्की के लिए अपने यहाँ बिना टैक्स सामानों का आयात करता है। जीएसपी कार्यक्रम के तहत, अमेरिका 129 नामित देशों की 4,800 अलग-अलग वस्तुओं पर शुल्क मुक्त प्रवेश (duty-free access)प्रदान करता है। भारत के लिए तत्काल नुकसान लगभग 1,900(जो सभी भारतीय उत्पादों के आधे से अधिक है) उत्पादों का है, जो अमेरिकी बाजार में शून्य या न्यूनतम शुल्क पर प्रवेश करते थे।

वाणिज्य मंत्रालय ने इस खबर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत को जीएसपी वापसी से नुकसान कम से कम होने वाले हैं। यह दावा इस तथ्य पर आधारित है कि इस कार्यक्रम से भारत को जो वास्तविक टैरिफ लाभ मिल रहा था वह 190 मिलियन अमरीकी डॉलर था, जो कि यूएस के लिए सभी भारतीय निर्यातों पर 50 बिलियन अमरीकी डालर का केवल 0.4 प्रतिशत है।
दुर्भाग्य से, सरकार का तर्क उस बिंदु को दर्शाता है जिसमें भारत मैक्सिको सहित अन्य कम आय वाले देशों की मेजबानी के साथ अमेरिका में बाजार हिस्सेदारी के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहा है। उद्योगों में जहाँ मार्जिन बहुत छोटा है, बाजार मूल्य में बहुत कम वृद्धि भी निर्यात की मात्रा में बड़ी गिरावट का कारण बन सकती है। निश्चित रूप से, निर्यात की मात्रा में संभावित गिरावट, जीएसपी को खोने के कारण हो सकती है।

यदि निर्यातक टैरिफ वृद्धि को अवशोषित करते हैं, तो उनका लाभ मार्जिन गिर जाएगा, जो संभवत: उनमें से कुछ को पूरी तरह से इस बाजार से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करेगा। भारत में वर्तमान में टैरिफ का लाभ कम है क्योंकि अमेरिका में औसत टैरिफ कम है। इसका उपयोग भारत द्वारा अपने जीएसपी विशेषाधिकार खोने की संभावित लागत के संकेतक के रूप में नहीं किया जा सकता है।
हालांकि, जीएसपी विकास, भारतीय निर्यात की सामान्य स्थिति पर आत्मनिरीक्षण करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। इस मामले का कच्चा तथ्य यह है कि पिछले कुछ समय से दुनिया के निर्यात में भारत का हिस्सा लगभग 2 प्रतिशत पर अटका हुआ है। अनिवार्य रूप से, हमारा निर्यात दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह ही बढ़ रहा है।

ऐसे देश के लिए, जो लगातार दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक रहा है, भारत का निर्यात बहुत तेजी से बढ़ रहा है। जिसे पिछले 30 वर्षों में चीन और अन्य पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ और पहले जापान के साथ देखा गया था। स्पष्ट रूप से, कुछ तो है जहाँ भारत पीछे रह जा रहा है।

भारतीय सेवा क्षेत्र के निर्यात पर ध्यान देने के बावजूद, कुल भारतीय निर्यात का लगभग 63 प्रतिशत अभी भी वस्तुएं ही हैं। यह सच है कि भारतीय सेवा क्षेत्र की विश्व सेवाओं के निर्यात में हिस्सेदारी 1990 में 0.5 प्रतिशत से बढ़कर 2017 में 3.7 प्रतिशत हो गई थी। लेकिन यह प्रदर्शन शायद ही उतना अच्छा हो जितना होना चाहिए। अगर हम चीन के सेवा क्षेत्र का विश्व सेवा क्षेत्र के निर्यात में हिस्से की बात करें तो पाएंगे कि यह 1992 में 0.9 प्रतिशत से बढ़कर 2017 में तीन गुणा से भी अधिक बढ़कर 3.8 प्रतिशत हो गया था।

चीन और भारत के बीच बड़ी असमानता वस्तुओं का निर्यात है। विश्व के कुल वस्तुओं के निर्यात में भारत का हिस्सा 1990 में 0.5 प्रतिशत से बढ़कर 2017 में 1.7 प्रतिशत हो गया था, जबकि इसी अवधि में चीन का 1.8 प्रतिशत से बढ़कर 12.8 प्रतिशत हो गया था। दरअसल, यह तेजी से हो रहे चीनी विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। बड़े पैमाने पर, निम्न-तकनीक, श्रम गहन व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात क्षेत्र में तेजी से वृद्धि ने अपेक्षाकृत अकुशल चीनी श्रमिकों की मांग में तेजी से वृद्धि के साथ-साथ तेजी से बुनियादी ढांचे की मांग में वृद्धि की है, जिसमें चीन ने निवेश किया है।

हालाँकि, भारतीय निर्यात चीनी निर्यात परिदृश्य से बहुत अलग दिखता है। भारत में पण्य निर्यात (Merchandise exports) आठ

उद्योगों में केंद्रित है, जो भारत की वस्तुओं के निर्यात का 85 प्रतिशत है। इन शीर्ष -8 उद्योगों में कपड़ा, रसायन, मशीनरी, वाहन और कलपुर्जे आदि शामिल हैं। इन उद्योगों में फैक्ट्रियां ज्यादातर छोटी हैं, जिनमें 100 या उससे कम श्रमिक काम करते हैं। इन विनिर्माण प्रतिष्ठानों में उत्पादकता का स्तर भी कम है। हालांकि,निर्यातक गैर-निर्यातकों की तुलना में अधिक बड़े और अधिक उत्पादक होते हैं, ये अंतर्राष्ट्रीय मानकों से कम हैं।

भारतीय निर्यात क्षेत्र के साथ समस्या दो गुनी प्रतीत होती है। पहला, विनिर्माण क्षेत्र को हानि पहुँचाने वाली सामान्य समस्या है। मौजूदा श्रम और भूमि कानून बड़े पैमाने पर फर्मों के लिए एक कठिन स्थिति का निर्माण कर रहे हैं। इसके अलावा, बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण को बनाए रखने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का समर्थन नहीं होना है। इनमें ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी और विश्वसनीय बिजली आपूर्ति शामिल है। फर्म छोटे रहने और पुरानी तकनीकों के साथ काम करने के लिए इसे इष्टतम पाते हैं। इसे ठीक करने के लिए कई मोर्चों पर ठोस कार्रवाई की आवश्यकता है।

दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा व्यापार शासन है। भारत को एक स्पष्ट संदेश देना होगा कि यह एक विश्वसनीय व्यापार भागीदार है, जो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बनना चाहता है। इसे प्राप्त करने के लिए, भारत को असफल नीतियों: जैसे- मेक इन इंडिया पहल को आगे बढ़ाने या चालू खाता असंतुलन को संबोधित करने की आड़ में आयात शुल्क को बढ़ाना, से दूरी बनानी होगी। अमेरिका द्वारा लिया गया यह फैसला आंशिक रूप से इस तरह के संरक्षणवादी कदमों की प्रतिक्रिया है।

अंत में, यूरोपीय संघ भी अमेरिका की तुलना में एक बड़ी इकाई है। यूरोपीय संघ के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत 2007 से चल रही है। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि अब समय आ गया है कि हम यूरोपीय संघ के साथ समझौते को आगे बढ़ायें।

GS World टीम...

सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (GSP)

चर्चा में क्यों?

- अभी हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ये फैसला लिया है कि वह भारत का नाम उन देशों की सूची से बाहर कर देंगे, जो सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (जीएसपी) कार्यक्रम का लाभ उठा रहे हैं।
- यह लाभ उन उत्पादों पर उठाया जाता है जिनका निर्यात अमेरिका को किया जाता है।
- अमेरिका के अनुसार उसने ये कदम भारत पर उचित व्यापारिक सहयोग नहीं करने के कारण कदम उठाया है।
- अमेरिका ने भारत के अलावा तुर्की का नाम भी इस सूची से बाहर कर दिया है।इससे पहले बीते साल ट्रंप ने भारत से आयातित 50 उत्पादों पर शुल्क मुक्त की रियायत खत्म कर दी थी।
- अमेरिका ने अप्रैल, 2018 में जीएसपी के लिए तय शर्तों की समीक्षा शुरू की थी।

क्या है?

- जीएसपी सूची में शामिल देशों के हजारों उत्पादों को अमेरिका में कर-मुक्त छूट की अनुमति देकर आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए लाया गया था।
- अमेरिका ने जीएसपी की शुरुआत 1 जनवरी, 1976 में विकासशील देशों में आर्थिक वृद्धि बढ़ाने के लिए की थी।
- अभी तक लगभग 129 देशों को करीब 4,800 गुड्स के लिए जीएसपी के तहत फायदा मिला है।
- सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली विकसित देशों (वरीयता देने वाले या दाता देश) द्वारा विकासशील देशों (वरीयता प्राप्तकर्त्ता या लाभार्थी देश) के लिये विस्तारित एक अधिमान्य प्रणाली है।

लाभ

- इस प्रणाली के तहत विकासशील देशों को विकसित देशों के बाजार में कुछ शर्तों के साथ न्यूनतम शुल्क या शुल्क मुक्त प्रवेश मिलता है।
- इसके जरिये विकसित देश विकासशील देशों और अल्प विकसित देशों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं।
- नामित लाभार्थी विकासशील देशों के लगभग 30-40 प्रतिशत उत्पादों के लिये वरीयता शुल्क मुक्त व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। भारत भी एक लाभार्थी विकासशील देश है।
- ऑस्ट्रेलिया, बेलारूस, कनाडा, यूरोपीय संघ, आइसलैंड, जापान, कजाकिस्तान, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, रूसी संघ, स्विट्जरलैंड, तुर्की और संयुक्त राज्य अमेरिका GSP वरीयताएँ देते हैं।

भारत पर प्रभाव

- अमेरिका के जीएसपी कार्यक्रम में शामिल लाभार्थी देशों को उत्पादों पर अमेरिका में कोई आयात शुल्क नहीं देना पड़ता।
- इस कार्यक्रम के तहत भारत को 5.6 अरब डॉलर (40 हजार करोड़ रुपये) के निर्यात पर छूट मिलती है। कार्यक्रम से बाहर होने के बाद भारत को ये लाभ नहीं मिलेगा।
- साल 2017 में भारत के साथ अमरीकी सामान और सेवा व्यापार घाटा 27.3 बिलियन डॉलर (2730 करोड़ डॉलर) का था।
- भारत अमेरिका के लिए 11 वाँ सबसे बड़ा व्यापार अधिशेष देश है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली की शुरुआत जून, 1976 में अमेरिका द्वारा विकासशील देशों में आर्थिक वृद्धि बढ़ाने के लिए की गयी थी।
2. वर्तमान में भारत अमेरिका के लिए 11वां सबसे बड़ा व्यापार अधिशेष देश है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

1. Consider the following statements :-

1. Generalized System of Preferences was started in June, 1976 by USA to boost the economic growth in developing countries.
2. At present India is the 11th biggest trade surplus country of America.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः हाल ही में अमेरिका द्वारा सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली के तहत भारत के निर्यात विशेषाधिकारों को रद्द करने का विचार भारत के व्यापार को किस प्रकार प्रभावित करेगा? चर्चा कीजिए।

(250 शब्द)

Q. How the intention of rescinding the export privileges of India under the Generalized System of Preferences by the US will affect India ? Discuss.

(250 Words)

नोट : 15 मार्च को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।

GS World
Committed To Excellence